“मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री की बदलती सामाजिक स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन”

“MAITREYI PUSHPA KE UPNYASON MEIN STREE KI BADALATI SAMAJIK STHITI KA ALOCHANATMAK ADHYAYAN”

शोध सार

प्रस्तुत शोध “मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री की बदलती सामाजिक स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन”समकालीन हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री-विमर्श के विकास को रेखांकित करने का प्रयास है। मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य की ऐसी महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री के पारंपरिक, दमनकारी और रूढ़ सामाजिक ढाँचों को प्रश्नांकित करते हुए उसकी आत्मचेतना, अस्मिता और स्वायत्तता को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है।

हमें यह जानना होगा कि मैत्रेयी न विवाह-संस्था के विरोध में है, न घर परिवार की सुखद समुन्नत गृहस्थी के वे खुद एक सद्गृहिणी हैं, पत्नी, माँ हैं। वे तो बस ये सवाल उठाती हैं कि स्त्री, पुरुष के समतुल्य क्यों नहीं रखी जाती? क्यों दोनों के लिए नियम अलग-अलग रखे गये हैं? क्यों जरूरी निर्णयों से उसे खारिज कर दिया जाता है?वादों-विवादों के कटघरे में स्त्री प्रश्नों से जूझती हुई मैत्रेयी अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री जीवन के उन तमाम मुद्दों को उठाती हैं जो सामाजिक नियमों की घुटन और दबाव में जन्म लेते हैं।

मैत्रेयी के शुरुआती उपन्यासों 'स्मृतिदंष' और 'बेतवा बहती रही'की भुवन और उर्वशी को छोड़ दें तो मंदा, सारंग, अल्मा, शीलो तक एक से बढ़कर एक नायिकाएँ हमें मिलती हैं जो 'भारतीय नारी' के आवरण से निकलती नजर आती है। 'भुवन' और 'उर्वशी' इसी आवरण में लिपटी, अपने भाग्य को कोसती हुई अगर मर जाती है तो इसका भी कारण है। दरअसल उस समय तक मैत्रेयी मानसिक रूप से इतनी दृढ़ नहीं हो पाई थीं कि स्त्री को उसके घेरे से बाहर निकाल कर इस पुरुषवादी समाज में अपने लेखन को कठिनाई में डाले पर बाद में उनकी मानसिक परिपक्वता ने अपने ही लेखन को चुनौती देते हुए इन नायिकाओं को फिर से रचा।

'अगनपाखी' और 'त्रिया हठ' में इन्होंने इन नायिकाओं की कमजोरियों को दूर कर जैसे अपने आप को ही मजबूत किया। 'इदन्नमम' की नायिका मंदा है जिसकी यातनाएँ दोहरी हैं, संघर्ष बड़े हैं, बेसहारा है पर अशक्त नहीं है। यहाँ मंदा के रूप में कथा लेखिका के व्यक्तित्व की झलक है। यह छाप सिर्फ वैचारिक नहीं है बल्कि इन विचारों को किस प्रकार अमल में लाया जाए इसका व्यावहारिक विवरण भी है। मंदा अपने जीवन की विषमताओं और कटु अनुभव को सकारात्मक ऊर्जा में बदलकर सोनपुरा के उस 'माफिया' से संघर्ष करती है, जो गाँव के हर व्यक्ति की आजादी को बंधक बनाए है। अपने अहिंसात्मक संघर्ष से ही वह आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका तैयार करती है। यह उपन्यास उन तमाम भारतीय स्त्रियों को लेकर लिखा गया है, जो पुरुष-प्रधान व्यवस्था में सदियों से अधिकार वंचित और काम-शोषित रही हैं। तभी तो बऊ के यह तर्क करने पर कि 'इज्जत-आबरू वाले घरों की जनी-मानसों को, इनके साथ चलना हीहै।' मंदाकिनी साफ नकारते हुए कहती है-"नहीं बऊ नहीं। हम नहीं मानते, अर्जुन द्वारा स्वयंवर करके लाई गई द्रोपदी को अपने पाँचों पुत्रों में बाँट देना तुम्हें अच्छा लगा होगा बऊ, हमें तो एक औरत के प्रति दूसरी औरत का घोरतम अन्याय और कुकर्म लगा।" मान-मर्यादा के नाम पर 'पुरुष-पूजा' का मंदा घोर विरोध करती है। मंदा के जरिए लेखिका औरत के मन, हौसले और बुद्धि की दहलाने, कुचलने वाले पुरुष समाज की बदनीयतियों का विरोध करती है। विवाहेत्तर प्रेम-संबंधों की वैधता जैसे ज्वलंत प्रश्नों को उठाकर, लेखिका प्रेमा और कुसुमा जैसी पात्रों की दो भिन्न दृष्टियों और परिणतियों का परिचय कराती हैं।

इसी मुद्दे को जब मैत्रेयी 'चाक' में उठाती है तो साहित्य जगत में तहलका-सा आ जाता है। उपन्यास की शुरुआत में ही रेशम की हत्या भी इसी कारण से होती है। विधवा होकर भी वह गर्भवती है। रेशम और रेशम की तरह कइयों की हत्या की दास्तान इस गाँव की मिट्टी में दबी है। मैत्रेयी नायिका 'सारंग' को रचती है, जो इन सबसे टक्कर ले। वह पढ़ी-लिखी और जागरूक स्त्री है। पति रंजीत उसकी लड़ाई में कुछ ही दूर साथ देता है। उसका निहित स्वार्थ और लालच उसे संघर्ष के रास्ते से भटकाता है। सारंग को विद्रोही तेवर अपनाने पड़ते हैं। सारंग का विरोध उस व्यवस्था से है, जो स्त्रियों को गुलाम बनाकर रखती है। पति को चुनौती देकर प्रधान पद के लिए उम्मीदवार के रूप में खड़ी होती है। अपना साथ देने वाले प्रेमी को गले लगाने से भी वह नहीं हिचकिचाती क्योंकि वह अपने किए हुए कार्य पर कभी भी अपराध बोध का अनुभव नहीं करती। यह प्रेम उसके लिए पाप नहीं है, उसकी भावसत्ता का विस्तार है।

'चाक' के हवाले से वे लिखती हैं 'यह कथा एक ऐसी स्त्री की आत्मस्वीकृति का आख्यान है, जो रिवाजों को स्त्री के लिए स्त्री की तरह बदलना चाहती है, वह भी स्त्री के उद्धार के लिए नहीं, उसके कर्मक्षेत्र के विस्तार के लिए। सच तो यह है कि सारंग मैत्रेयी जी के 'चाक' में ढलकर एक महानायिका बन गई है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास कबूतरा जैसी अपराधी जनजाति की स्त्रियों की मार्मिक कथा है, जिसके लिए सभ्य समाज के पास सिर्फ घृणा और तिरस्कार ही है। उनके पुरुष मार खाते या बिन मौत मरते हैं और स्त्रियों को सिर्फ 'भोग्या' की नजर से देखा जाता है।

'झूला नट' की शीलो, गाँव की अनपढ़ औरत होते हुए भी अपने व्यक्तित्व और अधिकार के प्रति जागरूक है। शीलो का दरोगा पति चाह कर भी उसका शोषण नहीं कर पाता। वहीं उपन्यास 'विज़न' की पढ़ी-लिखी डॉ. नेहा का शोषण उसके ससुर और पति आसानी से कर लेते हैं। मैत्रेयी की अन्य नायिकाओं के विपरीत नेहा का संघर्ष मानसिक है। अपने पति और ससुर से ज्यादा लायक डॉक्टर होने के बावजूद उसे अस्पताल में रिसेप्सनिस्ट की भाँति काम करना पड़ता है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अपने वजूद को न्यौछावर करके तमाम परंपराओं का पालन करे। अगर वह 'अच्छी' बने रहना चाहती है तो उसे अपनी अंतरात्मा की आवाज को मारना होगा। अंततः विक्षिप्तता की ओर बढ़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता। इसके विपरीत इसी उपन्यास विज़न की डॉ. आभा, जिसे डॉ. नेहा अपना गुरु मानती है, एक मजबूत इरादों वाली औरत है। अपने आत्मसम्मान और कैरियर को प्राथमिकता देने वाली आभा को हर स्तर पर अपनी दावेदारी का अहसास है। इस उपन्यास के जरिए यह सच्चाई सामने आती है कि, चाहे किसी भी वर्ग की औरत हो, संबंधों की रक्षा करने के लिए उसी का बलिदान माँगा जाता है।

'कही ईसुरी फाग' में रजऊ और ऋतु का संघर्ष समानांतर चलता है। ऋतु ईसुरी की फागों पर शोध करती हुई उस रजऊ को खोजती है जो ईसुरी की फागों में सिर्फ संबोधिता भर थी। इस कथा के बहाने मैत्रेयी उन स्त्रियों की जिंदगियों पर प्रकाश डालती हैं जो पुरुषों को प्रसिद्धि दिला कर खुद नेपथ्य में चली गईं। सच तो यही है कि उस हाड़-मांस की औरत में भी दिल धड़कता है, जो प्रेम कर सकती है तो वक्त आने पर देश और समाज के लिए कुर्बान भी हो सकती है।

इसी प्रकार 'गुनाह-बेगुनाह' की इला, समीना और प्रिया भी अपने देश और अपने सिद्धांतों के प्रति उतनी ही संवदेनशील हैं। यहाँ केस के रूप में दर्ज कितनी ही औरते हैं जो पुरुषों द्वारा

बलात्कारित, पीड़ित, शोषित होते हुए भी जीने के लिए संघर्ष कर रही हैं। पुलिस का बर्बर चेहरा और महिला पुलिस की दर्दनाक स्थिति का मंजर अपनी भयावता के साथ यहाँ नजर आता है। इला का स्थानांतरण कँटीली झाड़ियों भरे प्रदेश में कर दिया जाता है, फिर भी वह, वहाँ हरियाली पैदा करने के प्रयास में लग जाती है।

इस तरह सदियों से चली आ रही अंध परम्पराओं को तोड़कर जीवन में स्त्रियों को आगे बढना चाहिए। हमें अपने नजरिए को भी आवश्यक है। ताकि हम अपने आगे की पीड़ियों को एक स्वच्छंद समाज प्रदान कर पाए। मैंने अपने शोध प्रबंध में पहले अध्याय से लेकर सातवे अध्याय तक स्त्री की बदलती सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जिसका विवरण निम्नलिखित प्रस्तुत किया है।